4. 'तीन वर्ग' का सिद्धांत (The Theory of the Three Estates)

मध्यकालीन विचारकों ने समाज को तीन कार्यात्मक वर्गों में विभाजित किया:

* Oratores (प्रार्थना करने वाले): पादरी वर्ग, जो समाज की आत्मा की रक्षा करते थे।
* Bellatores (लड़ने वाले): सामंत और योद्धा, जो समाज की रक्षा करते थे।
* Laboratores (काम करने वाले): किसान, जो समाज का पेट भरते थे।
* वैचारिक उद्देश्य: यह विचार फैलाया गया कि तीनों वर्ग एक-दूसरे पर निर्भर हैं और किसी भी एक का अभाव समाज को नष्ट कर देगा।

सामंतवाद का पतन और नए विचारों का उदय

14वीं-15वीं शताब्दी तक आते-आते यह वैचारिक ढांचा टूटने लगा, जिसके प्रमुख कारण थे:

* मुद्रा अर्थव्यवस्था (Money Economy): भूमि के स्थान पर धन (Currency) शक्ति का केंद्र बनने लगा।
* बौद्धिक क्रांति: पुनर्जागरण (Renaissance) ने 'सामूहिक पहचान' के बजाय 'व्यक्तिवाद' (Individualism) को बढ़ावा दिया।
* धर्मयुद्ध (Crusades): इन युद्धों ने सामंतों की शक्ति कम की और राजाओं की शक्ति बढ़ाई, जिससे 'निरंकुश राजतंत्र' का मार्ग प्रशस्त हुआ।

निष्कर्ष (Conclusion)

सामंतवाद ने मध्यकालीन यूरोप को एक सुव्यवस्थित ढांचा दिया जहाँ हर व्यक्ति का स्थान और कर्तव्य स्पष्ट था। हालाँकि यह व्यवस्था शोषणकारी थी, लेकिन इसने 'अनुबंध' (Contract) और 'पारस्परिक उत्तरदायित्व' के वे बीज बोए, जो आगे चलकर आधुनिक लोकतंत्र और मानवाधिकारों के सिद्धांतों में विकसित हुए।